कि; दूध की बाल्टी, दूध का केन, दूध दोहने के मशीन, दूध पाइप लाइन, कूलर इत्यादि । इन सब का उचित रख–रखाव एवं सफाई स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लिए बेहद आवशयक है ।

- दूध के बर्तन पानी को शोषक ना हो, जंगरोधक धातु से निर्मित हो जैसे स्टेनलेस स्टील तथा उचित आकार एवं गुणवत्ता के होने चाहिए ।
- दूध के बर्तनों की दूध दोहन से पहले तथा बाद में अच्छी सफाई होनी चाहिए ।
- दूध के बर्तनों को पांच मिनट उबलते पानी में रख कर कीटाणु रहित करना चाहिए ।
- बर्तनों की सफाई के लिए प्रमाणित डिटर्जेंट एवं रसायनों का भी प्रयोग किया जा सकता है ।
- डिटर्जेंट के इस्तेमाल के बाद बर्तनों को साफ पानी से अच्छी तरह धोना चाहिए ।
- साफ किये गए बर्तनों को उल्टा कर के रख देना चाहिए, जिससे बचा पानी बाहर आ जाये ।
- गरीब पशुपालक बर्तन को धोने के बाद धूप में सुखा सकते है। सूर्य की रौशनी में कीटाणु नाशक क्षमता होती है ।

निष्कर्ष

स्वच्छ दूध उत्पादन कोई जटिल या महँगी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली रोजमर्रा की सरल एवं वैज्ञानिक सावधानियों का परिणाम है। पशुओं के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर ध्यान देना, पशुशाला को साफ, सूखा और हवादार रखना, तथा दुहाई से पहले और बाद में हाथों, थनों और बर्तनों की उचित सफाई सुनिश्चित करने से दूध की गुणवत्ता स्वाभाविक रूप से बेहतर होती है। स्वच्छ पानी का उपयोग, समय पर दुहाई, दूध को छानना, ठंडा रखना और सुरक्षित परिवहन जैसे छोटे–छोटे उपाय स्वच्छ दूध उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वच्छ दूध न केवल उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य की रक्षा करता है, बल्कि किसानों को बेहतर मूल्य, अधिक आय और सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्रदान करता है। इस प्रकार स्वच्छ दूध उत्पादन स्वस्थ समाज के निर्माण और किसानों की आर्थिक समृद्धि का सशक्त आधार है।

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा
योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/78/FFPF-1/2026/DEE/BASU-Patna

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

योगेन्द्र सिंह जादौन, निर्मल सिंह दहिया
एवं प्रज्ञा भदौरिया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली के फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के अंतर्गत प्रकाशित

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

स्वच्छ दुग्ध उत्पादन

दूध एक संपूर्ण आहार है और इसकी गुणवत्ता सीधे पशु, दुहाई प्रक्रिया, बर्तन, पानी तथा मानव स्वच्छता से जुड़ी होती है । स्वच्छ दूध उत्पादन का अर्थ है ऐसा दूध प्राप्त करना जिसमें गंदगी, दुर्गंध, रोगजनक जीवाणु, रासायनिक अवशेष तथा मिलावट न हो । स्वच्छ दूध न केवल उपभोक्ता के स्वास्थ्य की रक्षा करता है, बल्कि किसान को बेहतर मूल्य, लंबी शेल्फ लाइफ और दुग्ध सहकारी समितियों में स्वीकार्यता भी दिलाता है ।

स्वच्छ दूध उत्पादन का महत्व

- मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा।
- दूध से बनने वाले उत्पादों की गुणवत्ता में वृद्धि।
- दूध का अधिक मूल्य और बाजार में मांग।
- दुग्ध जनित रोगों से बचाव।
- दुग्ध सहकारी समितियों द्वारा दूध की अस्वीकृति में कमी।
- किसानों की आय में वृद्धि।

दूध दोहन की विधि

- हरेक पशु पालक को दूध दोहन की सही प्रक्रिया का पता होना चाहिए ।
- भारत में गाय भैंस को आम तौर पर हस्त दोहन ही किया जाता है। पशु को बाएं तरफ से दोहन करते है।
- सामान्यत : दो तरह से दोहन किया जाना चाहिए, एक चारों उंगलिओं व् हथेली के बीच दूध दोहन जिसे फुल हैंड मिल्किंग कहा जाता है और दूसरा ऊँगली और अंगूठे के सहारे जिसे स्ट्रिपिंग कहा जाता है ।
- जिन पशुओं के थन छोटे होते है उनके स्ट्रिपिंग की जाती है। बड़े थन वाले पशुओं की फुल हैंड मिल्किंग की जाती है। ये देखा गया है कि गायों में ग्वाले चारों उँगलियाँ एवं अंगूठे के जोर पर दूध निकालते है जिसे नकलिंग कहा जाता है। ये गलत विधि है, इसे बिलकुल नहीं करना चाहिए अन्यथा पशु के थनों के ऊतकों पर चोट लग सकती है। पशुपालकों को दूध दोहन से पहले, दौरान एवं बाद में निम्नलिखित सावधानियां रखनी चाहिए।

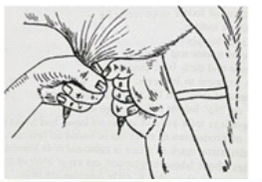

पूर्ण हस्त विधि

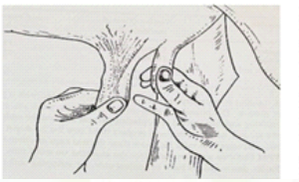

स्ट्रिपिंग

नकलिंग

दूध दोहन से पहले

- दूध दुहे जाने वाली जगह का वातावरण बिलकुल स्वच्छ और शांत होना चाहिए तथा वो जगह पशुओं के लिए आरामदायक होनी चाहिए। दूध दोहने वाली जगह को प्रत्येक दोहन के पहले अच्छी तरह धोना चाहिए।
- पशुओं के पिछले पैरों, थन के चारों तरफ और पूँछ के बालों की दुग्ध दोहन से पूर्व ब्रश से सफाई करनी चाहिए।
- दूध दोहन से पहले ग्वाले के हाथ, पैर और कपड़े इत्यादि पूरी तरह से साफ रहने चाहिए। उसके नाखून अच्छी तरह से कटे होने चाहिए। दूध दोहन से पूर्व उसे अपने हाथों को साबुन और साफ पानी से धो कर तौलिये से पोंछने चाहिए।
- दुग्ध दोहन से पहले अयन के अग्र भाग को अच्छे से धोना चाहिए। इसके लिए 0.1 प्रतिशत ऐक्रीफ्लेविन, पोटेशियम परमैंगनेट लोशन, सेवलोन या डेटॉल का प्रयोग किया जा सकता है।

दुग्ध दोहन के दौरान

- पशु का पुरे हाथ से दोहन करना चाहिए।
- दुग्ध दोहन 5–7 मिनट के अंदर पूरा कर लेना चाहिए।
- दोहन के समय पशु को दाना देने से पशु का ध्यान नहीं भटकता और वह चुपचाप दोहन करने देती है।
- दोहन के वक्त पशु को बारीक भूसा नहीं खिलाना चाहिए क्यूंकि भूसा उड़ कर दूध में गिर सकता है।
- हरेक थन से शुरूआती दूध की धारा को अलग कर देना चाहिए क्यूंकि उनमें सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या ज्यादा होती है।
- दुग्ध दोहन के दौरान भूल कर भी ग्वाले को बीड़ी, सिगरेट या नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए।

दुग्ध दोहन के बाद

- दुग्ध दोहन के पश्चात थानों के अग्र भाग को जीवाणुनाशक घोल में डुबोना चाहिए।
- दुग्ध दोहन से आधे से एक घंटे के बाद तक पशु को बैठने नहीं देना चाहिए थन के खुले रहने की वजह से उस अवधि में संक्रमण फैल सकता है।

दूध दोहने के उपकरण एवं एवं बर्तन

- फार्म पर दूध दोहने के लिए विभिंन प्रकार के उपकरण एवं बर्तन इस्तेमाल होते है, जैसे